International Journal of Sanskrit Research 2015; 1(2): 41-43

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2015; 1(2): 41-43
© 2015 IJSR
www.sanskritjournal.com
Received: 25-11-2014
Accepted: 15-12-2014

डॉ0 नन्दन कुमार तिवारी
अकादमिक एसोसिएट ज्योतिष विभाग,
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय,
हल्द्वानी, उत्तराखण्ड

Correspondence
डॉ0 नन्दन कुमार तिवारी
अकादमिक एसोसिएट ज्योतिष विभाग,
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय,
हल्द्वानी, उत्तराखण्ड

भारतीय पंचांग निर्माण : संक्षिप्त परिचय

डॉ0 नन्दन कुमार तिवारी

सारांशिका
'पंचांग' ज्योतिष शास्त्र का अद्वितीय भाग है। यह ज्योतिष के समस्त अंगों को सारतत्व के रूप में प्रकट करता है। आम जनमानस के लिए भी यह अत्यन्त उपयोगी है। वार्षिक पर्व–त्योहार तथा धर्मकृत्य का ज्ञान इससे सहज ही प्राप्त हो जाता है, क्योंकि पंचांगकार जनोपयोगी व्रत – पर्व एवं धार्मिक कार्यादि का विवेचन पंचांग में पूर्व में ही अंकित कर देते हैं। पंचांग निर्माण प्रति वर्ष किया जाता है। भारतवर्ष में पंचांग निर्माण की परम्परा वैदिक काल से ही चली आ रही है। समय – समय पर उनके रूपों में परिवर्तन भी होता रहा है। ज्योतिष के आचार्यों ने दृक्सिद्ध शुद्ध पंचांग निर्माण करने की बात कही है। पंचांगों में स्थान भेद, कालान्तर भेद, चरान्तर भेद, एवं सारिणी भेद से अन्तर आता है, जो स्वाभाविक है। इन दोषों के निराकरणार्थ पंचांगाकारों ने अपने – अपने ग्रन्थों में समाधान भी उद्धृत किया है। भारत में पंचांग निर्माण की एक दीर्घ परम्परा रही है, जो आज भी अक्षुण्ण रूप से गतिमान है। भारत में दो पद्धति से पंचांग निर्माण किया जाता है, प्रथम सायनपद्धति एवं द्वितीय निरयण पद्धति। वाराणसी, अयोध्या, दिल्ली, कोलकाता, मुम्बई, उज्जैन, जयपुर, जोधपुर, नवलगढ, दरभंगा, गुजरात, चण्डीगढ, जालंधर, दतिया, मथुरा, रामगढ तथा गढवाल आदि भारतवर्ष के ऐसे प्रमुख स्थल हैं जहॉ पंचांग निर्माण होता हैं। इसके अतिरिक्त भी कई स्थल हैं जहॉ पंचांग निर्माण का कार्य होता हैं। सम्प्रति 300 (अनुमानित) से अधिक पंचांग भारत में प्रकाशित होते है।

कूट शब्द : – अद्वितीय, जनोपयोगी, दृक्सिद्ध, दृक्तुल्य, कालान्तर, समाविष्ट, उदयास्त, सार्वभौमिक।

प्रस्तावना
भारतवर्ष में पंचांग – निर्माण के आरम्भ की कोई निश्चित तिथि उपलब्ध नहीं है, किन्तु ज्योतिर्विदों के द्वारा यह कहा जाता है कि भारत में पंचांग का निर्माण प्राचीन काल से होता रहा है। आरम्भ में पंचांग का स्वरूप वर्तमान के सादृश्य नहीं था। आचार्य शंकर बालकृष्ण दीक्षित जी ने अपने ग्रन्थ 'भारतीय ज्योतिष' में कहा है कि आरम्भ में पंचांग के एकांग, द्वयंग व त्र्यंग रूप थे। सम्प्रति पंचांग के पॉच अंग होते है – तिथि, वार, नक्षत्र, योग एवं करण। इसके अतिरिक्त ग्रहस्पष्टीकरण, ग्रहण, व्रत, पर्व एवं विभिन्न संस्कारादि भी पंचांग में समाहित होते है। भारतवर्ष में पंचांग निर्माण पक्षों पर आधारित है – ब्राह्मपक्ष, सौरपक्ष एवं आर्यपक्ष। स्पष्टता के दृष्टिकोण से 'सौरपक्ष' सर्वस्वीकृत है। सायन एवं निरयण दो पद्धतियों से पंचांग का निर्माण होता है। दृक्सिद्ध शुद्ध पंचांग निर्माण के लिये वेध की भी आवश्यकता होती है। गणितागत ग्रह एवं वेधसिद्ध ग्रह जब दोनों तुल्य होते हैं तभी दृक्सिद्ध की सिद्धि होती है।

सौरपक्ष, ब्रह्मस्फुट सिद्धान्त पक्ष एवं आर्य पक्ष के अनुसार ज्योतिष के पूर्वाचार्यों ने करणकुतूहल, भास्वती, करणप्रकाश, मकरन्द, ग्रहकौतुक, लघुचिन्तामणि, करण कौस्तुभ पंचांग कौतुक आदि ज्योतिष सम्बन्धित करण ग्रन्थों की रचना की है जिनके गणित के अनुसार ही सर्वत्र निरयण पंचांग का प्रकाशन प्रचलित है। आधुनिक समय में सौर पक्ष के करण ग्रन्थ लघु चिन्तामणि ग्रन्थ के गणितानुसार महाराष्ट्र, मुम्बई, पूना गुर्जर प्रान्त, बीजापुर, बेलगॉव, धारवाड, वराड, बडौदा आदि दक्षिण भारत के नगरों में सौरपक्षीय ग्रहलाघव पद्धति से पंचांगों का प्रकाशन होता है। काशी, ग्वालियर, इन्दौर तथा मध्यप्रदेश के अन्य नगर एवं उत्तरप्रदेश में 'मकरन्दसारणी' से पंचांगों का प्रकाशन हो रहा है। ग्रहलाघव ग्रन्थकर्ता गणेश दैवज्ञ ने लघुचिन्तामणि व वृहतचिन्तामणि करण ग्रन्थों में बीज संस्कार देकर तथा आकाशीय ग्रह स्थितियों का यन्त्रों द्वारा निरन्तर वेधकर छायार्क और कर्णार्क के दृग्गणितैक्य समन्वय को सुरक्षित बनाये रखा तदुपरान्त वेध प्रक्रिया निरन्तर शिथिल होती रही और बीज संस्कार की प्रणाली का भी उत्तरोत्तर ह्रास होता रहा। ग्रहलाघवीय पद्धति व मकरन्द सारणी नामक करण ग्रन्थों के तिथि नक्षत्र योगादि के मान में तथा ग्रहचार में आधुनिक समय अत्यधिक स्थूलता आ जाने के कारण समस्त धार्मिक कृत्य व्रतोत्सवादि, षोडश संस्कार, में भी अशुद्धि होती चली आ रही है। इस बात को सिद्धान्तज्ञों ने प्रचलित पंचांग की मान्यता पर प्रश्न चिन्ह लगाकर; नाटिकल अल्मनाकद्ध पंचांग की प्रणाली जो सर्वथा दृग्गणितैक्य में सामंजस्य प्रकट करती है उसे अपना कर दृक्सिद्ध निरयण पद्धति के आधार पर पंचांग का प्रकाशन प्रारम्भ किया है इस पद्धति से निर्मित पंचांगों के तिथ्यादि व ग्रहगोचरादि शुद्ध होने से इन पंचांगों से धार्मिक कृत्य व्रतोत्सवादि संहिता व जातक विषयक सभी काम सम्पन्न करने पर ही धर्म शास्त्रीय विधिविधान की सुरक्षा हो सकती है, किन्तु अधिक स्थलों पर आज भी ग्रहलाघवीय एवं मकरन्दसारणी से ही पंचांगों का प्रकाशन हो रहा है इस कारण दृक्सिद्ध निरयन पंचांगों का पूर्ण लाभ सर्वत्र प्रचलित नहीं है।

आकाश में ग्रहों की स्थिति सायनमान में ज्ञात होती है जिसकी गतिशीलता अयन बिन्दु से ही गणना करके की जाती है जो वेधशाला स्थित यन्त्रों द्वारा ही प्रत्यक्ष में दृष्टिगोचर होती है इस प्रकार यन्त्रों द्वारा छायार्क मान जो आकाश में दृष्टिगोचर होता है वह प्राप्त होता है। अयन बिन्दु के प्रतिवर्ष 50.2 विकलात्मक गति से चलने के

कारण वर्तमान समय में 23 अंश 50 कला के मान तुल्य अयन गति यन्त्रों द्वारा वेध करने पर प्राप्त हो रही है। इस अयनबिन्दु के गतिशीलत्व को देखकर धर्मशास्त्राचार्यों ने स्थिर अयन बिन्दु से गणित सम्पादन का निर्णय लेकर निरयण पद्धति से पंचांग प्रकाशन का आदेश दिया, इस कारण ही यत्र तत्र सर्वत्र भारतवर्ष में इस पद्धति द्वारा ही पंचांग का प्रकाशन हो रहा है। पंचांग की गणित प्रक्रिया द्वारा सूर्य स्पष्ट का मान कर्णार्क के नाम से प्रसिद्ध है जिसकी गणना स्थिर अयन बिन्दु से होती है। छायार्क जो वेधोपलब्ध है उसका और कणार्क का जो अन्तर प्राप्त होता है वह आजकल 23 अंश 50 कला के आसन्न है वह ही अयनांश नाम से ज्ञातव्य है मकरन्द व ग्रहलाघवीय पद्धति से कर्णार्क प्राप्त होता है और विछोप लब्ध जो छायार्क होता है इन दोनों के अन्तर करने पर 23 अंश 50 कला का अन्तर प्राप्त नहीं होता इस कारण करर्णार्क का मान अशुद्ध हो जाता है इसी प्रकार अन्य ग्रहों के मान में भी भिन्नता प्राप्त होती है जो धर्मशास्त्रोक्तकृत्यों के यथा समय होने में बाधा उत्पन्न कर रही है। आधुनिक समय में नाटीकल पंचांग के अनुसार दक्षिण भारत केरोपन्त लक्ष्मणछत्रे गणितज्ञ द्वारा दृक्सिद्धनिरयण पंचांग का प्रकाशन हो रहा है तथा अन्य अनेक पंचांग भी दक्षिण भारत में दृक्सिद्ध प्रकाशित हो रहे हैं ! उत्तर भारत में वेंकटेश शताब्दी पंचांग स्व0 ईश्वरदत्त जी का नवलगढ; राजस्थानद्ध से, स्व0 राजा अजीत सिंह द्वारा खेतडी राजस्थान से, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी; उ0प्र0द्ध से, स्व0 मुकुन्द वल्लभ ज्योतिषाचार्य द्वारा प्रवर्तित मार्तण्ड पंचांग कुराली; पंजाबद्ध से, पं0 देवीदयाल का पंजाब जलंधर ;पंजाबद्ध से, श्रीलाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ; दिल्लीद्ध से, विद्यापीठ पंचांग, राजधानी पंचांग दिल्ली से, जन्मभूमि पंचांग मुम्बई से तथा इसके अतिरिक्त कुछ और भी पंचांग दृक्सिद्ध नाटीकल अल्मनाक पद्धति से प्रकाशित होते है।

उत्तर भारत में पं. बृजमोहन 'निराला' पंचांग का निर्माण वैदिक काल से होता आ रहा है। पहले कभी यह एकांग तिथि मात्र था। बाद में नक्षत्र एवं वार के सम्मिलित हो जाने पर यह द्वयंग एवं त्र्यंग बना। कालांतर में योग एवं करण के समाविष्ट होने पर इसे 'पंचांग' कहा जाने लगा। भारत में कई स्थानों पर पंचांग का निर्माण होता है। पंचांग निर्माण की यह परम्परा सुदीर्घ है। दृक्सिद्ध शुद्ध पंचांग के निर्माणार्थ उत्तर भारत में सवाई राजा जयसिंह ने उज्जैन, काशी, दिल्ली, जयपुर एवं मथुरा में भव्य वेधशालाओं का निर्माण करवाया। विभिन्न स्थलों पर स्थित वेधशालाओं से प्राप्त ग्रह और नक्षत्रों की राशिचक्र में अंशात्मक स्थिति ज्ञात कर शुद्ध गणित से पांच अंगों तिथि, वार, नक्षत्र, योग एवं करण का विश्लेषण किया जाता था। पंचांग का निर्माण सिद्धांत ग्रन्थों में व्यक्त गणित के आधार पर होता है, इसलिए इसका निर्माण किसी भी स्थल पर किया जा सकता है। गणित की सहायता से सापेक्षतः पृथ्वी के किसी भी स्थल के दिक्, देश एवं काल का आनयन किया जा सकता है। सिद्धांत ग्रंथों के आधार पर निर्मित होने वाले पंचांगों का गणित केवल किसी स्थान विशेष के लिए ही नहीं होता, अपितु इन ग्रंथों में व्यक्त गणित के आधार पर भारत के किसी समय की सूर्य, चंद्र इत्यादि ग्रहों की गति–स्थिति तथा उदयास्त, ग्रहण इत्यादि ज्योतिष संबंधी तथ्यों की जानकारी प्राप्त की जा सकती है। अतः स्पष्ट है कि पंचांग का निर्माण किसी भी स्थल पर किया जा सकता है।

उत्तरभारत के पंचांगों में पंचांग परिवर्तन की गणितीय विधि दी गई होती है जिसके द्वारा एक स्थल पर निर्मित पंचांग को अन्य स्थल के पंचांग में परिवर्तित किया जा सकता है। पंचांग के सार्वभौमिक महत्व को ध्यान में रखते हुए प्रयास किया जाता है कि इसका निर्माण ऐसे स्थल (अक्षांश–रेखांश) पर किया जाए जहां की जनसंख्या अधिक हो, ताकि इसका लाभ अधिक से अधिक लोगों को मिल सके। यही कारण है कि उत्तर भारत में दिल्ली एवं काशी से अनेक पंचांग निकलते हैं। यद्यपि भारत के किसी भी स्थल पर बने पंचांग को देशांतर, चरांतर इत्यादि संस्कारों द्वारा स्थानीय पंचांग में परिवर्तित कर सकते हैं, किंतु स्थानीय पंचांग का उपयोग करना अधिक उचित होता है। पंचांग के निर्माण में स्थल का विशेष महत्व है। निर्माण स्थल के अक्षांश और रेखांश अथवा पलभा के आधार ही गणित की सहायता से तिथि, वार (वार प्रवृत्ति), नक्षत्र, योग एवं करण के घटी–पलात्मक मानों को पंचांग के माध्यम से व्यक्त किया जाता है। भिन्न–भिन्न स्थलों पर निर्मित पंचांगों में तिथ्यादि के घटी–पलात्मक मान भिन्न–भिन्न होते हैं, जो स्थानीय सूर्योदय के आधार पर ज्ञात किए जाते हैं। आज से कुछ वर्ष पूर्व ज्योतिर्विद स्वनिर्मित स्थानीय पंचांग प्रयोग करते थे। कालांतर में उत्तर भारत में पंचांग का निर्माण अधिकांशतः हर प्रांत एवं मंडल में होने लगा। वर्तमान में उत्तर भारत में पंचांग निर्माण के प्रमुख स्थल इस प्रकार हैं – (1) वाराणसी (उ. प्र.) (2) दिल्ली (3) उज्जैन (म.प्र.) (4) कलकत्ता (प.बं.) (5) जोधपुर (राजस्थान) (6) चंडीगढ़ (हरियाणा) (7) जालंधर (पंजाब) (8) दरभंगा (बिहार) (9) नवलगढ (राजस्थान) (10) मथुरा (उ.प्र.) (11) जबलपुर (म.प्र.) (12) रामगढ़ (राजस्थान) (13) अयोध्या (उ.प्र.) (14) दतिया (म.प्र.) (15) गढ़वाल (उत्तरांचल)। उत्तर भारत में काशी धार्मिक दृष्टि से ही नहीं वरन् ज्योतिषीय अध्ययन की दृष्टि से भी एक महत्वपूर्ण स्थल है। काशी को शिव का वास स्थान कहा जाता है। नारद पुराण में महर्षि नारद ने काशी के माहात्म्य का वर्णन करते हुए कहा है कि – सभी देवों का एक मात्र वास स्थान वाराणसी पुरी संपूर्ण तीर्थों में उत्तम तीर्थ है। जो इस परम तीर्थ वाराणसी (काशी) क्षेत्र का स्मरण करते हैं, वे सब पापों से मुक्त होकर शिवलोक को चले जाते हैं[1]।

अतः स्पष्ट है कि काशी का धार्मिक दृष्टि से अत्यधिक महत्व है। भारत के मानचित्र पर काशी ग्रीनविच रेखा से पूर्वी रेखांश 83^0 – 0 तथा उत्तरी अक्षांश 25^0 – 19 पर स्थित है। गंगा के किनारे स्थित होने के कारण काशी में जप, दान, व्रत एवं स्नान आदि धार्मिक कृत्यों का विशेष महत्व है। धार्मिक कृत्यों के संपादन एवं शुभाशुभ समयानुसार संपन्न करने की विधि का ज्ञान पंचांग के माध्यम से होता है। अतः पंचांग निर्माण की दृष्टि से भी काशी एक अति महत्वपूर्ण स्थल है। ज्योतिष का अध्ययन यहां प्राचीनकाल से होता आ रहा है। **काशी से निकलने वाले पंचांगों** में प्रमुख हैं – विश्व पंचांग, श्री ह्रषीकेश (काशी विश्वनाथ) पंचांग, बापूदेव शास्त्री प्रवर्तित दृक्सिद्ध पंचांग, ज्ञानमंडल सौर पंचांग, श्री महावीर पंचांग, श्री गणेश आपा पंचांग इत्यादि। इन पंचांगों का निर्माण अलग–अलग सिद्धांत अथवा करण ग्रन्थों के आधार पर निरयन पद्धति से होता है। दिल्ली न केवल भारत की राजधानी है, बल्कि उत्तर भारत में पंचांग निर्माण का महत्वपूर्ण स्थल है। भारत के मानचित्र पर दिल्ली नगर ग्रीनविच रेखा से पूर्वी रेखांश 77^0 : 12 और उत्तरी अक्षांश 28^0 : 38 पर स्थित है। दिल्ली की जनसंख्या एक करोड़ से भी अधिक है, फलतः यहां ज्योतिष की आवश्यकता की दृष्टि से पंचांगों की बिक्री भी अधिक होती है। दिल्ली का प्रभाव संपूर्ण भारत पर दिखाई देता है इसीलिए यहां के घटनाक्रम का अध्ययन ज्योतिष की दृष्टि से भी किया जाता है। **दिल्ली से निकलने वाले पंचांगों** मे प्रमुख हैं – विश्वविजय पंचांग, श्री आर्यभट्ट पंचांग, विद्यापीठ पंचांग एवं पं. जैनी जीयालाल शिखर चंद्र जी चौधरी कृत असली पंचांग इत्यादि। इन सभी पंचांगों का निर्माण चित्रापक्षीय एवं निरयन पद्धति से किया जाता है। विद्यापीठ पंचांग का निर्माण लाल बहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ (मानित वि.वि.) के तत्वावधान में होता है। इसके प्रधान संपादक कुलपति महोदय होते हैं। इस पंचांग का निर्माण विद्यापीठ की वेधशाला की सहायता से होता है। यह एक दृक्सिद्ध शुद्ध पंचांग है। दिल्ली स्थित धर्मसन प्रकाशन से प्रकाशित श्री आर्यभट्ट पंचांग के प्रधान संपादक पंलक्ष मीनारायण शर्मा हैं। यह पंचांग मुखयतः आर्य सिद्धांत पर आधारित है। विश्वविजय पंचांग के आद्य संपादक स्व. श्री हरदेव शर्मा (त्रिवेदी) एवं संपादक श्री सुधाकर शर्मा त्रिवेदी हैं। वर्तमान में विश्वविजय पंचांग के मुद्रक एवं वितरक रुचिका पब्लिकेशन हैं। उक्त सभी पंचांगों का निर्माण दिल्ली के अक्षांश–रेखांश अथवा पलभा के आधार पर नवीन दृक् गणित की सहायता से हो रहा है। इस तरह स्पष्ट है कि उत्तर भारत में पंचांग निर्माण की दृष्टि से दिल्ली एक अति महत्वपूर्ण स्थल है। उज्जैन उज्जयिनी या अवंतिका गुप्तकाल में खगोल–ज्योतिष का प्रमुख केन्द्र एवं विख्यात खगोलज्ञ वराहमिहिर की कर्मभूमि रही है। ज्योतिषीय अध्ययन की दृष्टि से उज्जैन का विशेष महत्व है। भारत के मानचित्र पर उज्जैन ग्रीनविच रेखा से पूर्वी रेखांश 75^0 43 और उत्तरी अक्षांश 23^0 1 पर स्थित है। प्राचीन आचार्यों ने उज्जैन को याम्योत्तर (दक्षिणोत्तर) रेखा पर दर्शाया है। सूर्य सिद्धांत के अनुसार लंका और सुमेरु पर्वत के बीच पृथ्वी पर खींची गई रेखा पर स्थित नगर रेखापुर कहलाते हैं। रोहतक, अवंती (उज्जयिनी) एवं कुरुक्षेत्र इत्यादि ऐसे ही नगर हैं। याम्योत्तर रेखा पर स्थित होने के कारण सिद्धांत ग्रन्थों में उज्जयिनी के सूर्योदय कालीन मध्यम ग्रहों को दर्शाया गया है। सिद्धांत शिरोमणि के अनुसार जो रेखा लंका, उज्जयिनी, कुरुक्षेत्र आदि को स्पर्श करती हुई सुमेरु पर्वत तक गई है, उसे विद्वानों ने भू–मध्य रेखा कहा है। भारतीय ज्योतिष में 0 देशांतर अर्थात लंका के आधार पर ग्रह गणना की गई है तथा देशांतर आदि स्थानीय संस्कार उज्जयिनी से किए गए हैं। इसकी भौगोलिक स्थिति को ज्योतिष के उपयुक्त पाकर सवाई राजा जयसिंह ने यहां एक वेधशाला का निर्माण कराया। आज से लगभग पांच हजार वर्ष पूर्व जब सूर्य की परमक्रांति 24^0 तथा उज्जैन के अक्षांश तुल्य थे तब सूर्य उज्जैन के खमध्य में आकर ही अपना परमोत्तर गमन पूर्ण करके दक्षिणाभिमुख यात्रा करता था। वार–प्रवृत्ति का ज्ञान भी उज्जैनी से किया जाता है। इस तरह, उत्तर भारत में पंचांग निर्माण की दृष्टि से उज्जैन एक महत्वपूर्ण स्थल है। महाकालेश्वर की नगरी से विख्यात उज्जैन से निकलने वाले पंचांगों में दृश्य ग्रह स्थिति पंचांग एवं विक्रम विजय पंचांग प्रमुख हैं। एस्ट्रॉनॉमिकल

एफेमरीज का निर्माण जीवाजी शासकीय वेधशाला, उज्जैन से प्राप्त खगोलीय दृश्य ग्रह स्थिति के आधार पर होता है। इस एफेमरीज में भारतीय समयानुसार दोपहर 12 बजे के सायन ग्रहस्पष्ट दर्शाए गए हैं। एस्ट्रॉनॉमिकल एफेमरीज में व्यक्त स्पष्ट ग्रहों के भोग्यांशों में चालन एवं अयनांश हीन करने पर कलकत्ता की लहरी एफेमरीज में व्यक्त स्पष्टग्रहों के भोग्यांशों के तुल्य प्राप्त होते हैं। उज्जैन के संदीपन व्यास प्रकाशन से प्रकाशित विक्रम विजय पंचांग के प्रधान संपादक डॉ. मदन व्यास हैं। यह एक शास्त्रसम्मत् पंचांग है। उज्जैन के अक्षांशादि पर ही श्री मातृभूमि पंचांग का निर्माण केतकी चित्रापक्षीय दृश्य गणित के अनुसार होता है। डॉ. विष्णु कुमार शर्मा इसके पंचांगकार हैं। उक्त पंचांगों के अतिरिक्त कुछ अन्य पंचांग भी उज्जैन से प्रकाशित होते हैं जिनमें पं. भगवती प्रसाद पांडेय द्वारा संपादित श्री विक्रमादित्य पंचांग और पं. आनंद द्रांकर व्यास द्वारा प्रकाशित नारायण विजय पंचांग आदि प्रमुख हैं। जबलपुर जबलपुर भारत के मानचित्र पर ग्रीनविच रेखा से पूर्वी रेखांश 79^0 57 तथा उत्तरी अक्षांश 23^0 10 पर स्थित है। यहां से निकलने वाले पंचांगों में भुवन विजय पंचांग एवं लोक विजय पंचांग प्रमुख हैं। कलकत्ता कलकत्ता भारत के पूर्वोत्तर भाग में स्थित है। यह भारत की सर्वाधिक जनसंखया वाले नगरों में से एक है। यह ग्रीनविच रेखा से पूर्वी रेखांश 88^0 23 तथा उत्तरी अक्षांश 23^0 35 पर स्थित है। यहां स्थित पोजिशनल एस्ट्रॉनॉमी सेंटर से दि इंडियन एस्ट्रॉनॉमिकल एफेमरीज निकलती है, जिसका प्रकाशन सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार का प्रकाशन विभाग करता है। इसके अतिरिक्त लहरी इंडियन एफेमरीज का निर्माण भी कलकत्ता के अक्षांश–रेखांश पर होता है। लहरी इंडियन एफेमेरीज में भा.मा.स. में प्रातः 5 बजकर 30 मिनट के निरयन स्पष्ट ग्रहों को दर्शाया जाता है। इस एफेमेरीज की शुरुआत खगोलज्ञ श्री निर्मल चंद्र लहरी ने सन् 1948 में की। श्री निर्मल चंद्र लहरी के अनुसार शक 207 (285 ई.) में अयनांश शून्य मानकर निरयन ग्रह गणना निर्देशित है। कलकत्ता से निकलने वाले पंचांगों में ये दोनों एफेमेरीज प्रमुख हैं। इस तरह, पंचांग निर्माण की दृष्टि से कलकत्ता एक महत्वपूर्ण स्थल है। जोधपुर जोधपुर राजस्थान प्रांत का प्रमुख शहर है, जो ग्रीनविच रेखा से पूर्वी रेखांश 73^0 2 तथा उत्तरी अक्षांश 26^0 18 पर स्थित है। निर्णयसागर, चंडमार्त्तंड पंचांग तथा श्री गजेंद्र विजय पंचांग का निर्माण जोधपुर के अक्षांश–रेखांश के आधार पर होता है। स्वल्पांतर से निर्णय सागर पंचांग में जोधपुर के रेखांश 73^0 4 का प्रयोग किया गया है। दोनों पंचांगों में चित्रापक्षीय अयनांश ग्रहण किया गया है। पं. श्री भवानी शंकर का निर्णयसागर पंचांग संपूर्ण उत्तर भारत में प्रसिद्ध है। श्री गजेंद्र विजय पंचांग एवं नई दिल्ली के श्री विश्वविजय पंचांग दोनों का ग्रहगणित एवं निर्माण पद्धति एक समान है। इन दोनों पंचांगों के आद्य संपादक श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी हैं। नवलगढ़ राजस्थान प्रांत का नवलगढ़ शहर ग्रीनविच रेखा से पूर्वी रेखांश 75^0 18 तथा उत्तरी अक्षांश 27^0 51 पर स्थित है। इन्हीं अक्षांशादि के आधार पर जयपुर ज्योतिष मंत्रालय द्वारा प्रत्यक्षानुभव करके सूक्ष्म दृश्य गणित से वेंकटेश्वर शताब्दी पंचांग तथा पंचवर्षीय श्री सरस्वती पंचांग का निर्माण होता है। दोनों पंचांगों के संपादक पं. ईश्वर दत्त जी शर्मा हैं। राजस्थान के एक और शहर अजमेर से पं. भवर लाल जोशी के आदित्यविजय पंचांग का प्रकाशन होता है। चंडीगढ हरियाणा प्रांत में स्थित चंडीगढ़ ग्रीनविच रेखा से पूर्वी रेखांश 76^0 52 तथा उत्तरी अक्षांश 30^0 44 पर स्थित है, जिनके आधार पर श्री मार्त्तंड पंचांग का निर्माण होता है। निरयन पद्धति के इस पंचांग में चित्रापक्षीय अयनांश ग्रहण किया गया है। इस पंचांग के आद्य संपादक पं. श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र हैं। जालंधर पंजाब प्रांत में स्थित शहर जालंधर ग्रीनविच रेखा से पूर्वी रेखांश 75^0 18 तथा उत्तरी अक्षांश 31^0 21 पर स्थित है, जिनके आधार पर पंचांग दिवाकर का निर्माण होता है। इस पंचांग में भी चित्रपक्षीय निरयन पद्धति को अपनाया गया है। इस पंचांग के संस्थापक पंदेवी दयालु ज्योतिषी लाहौर वाले हैं। दरभंगा बिहार प्रांत में स्थित दरभंगा शहर ग्रीनविच रेखा से पूर्वी रेखांश 85^0 54 तथा उत्तरी अक्षांश 26^0 10 पर स्थित है। यहां स्थित कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालय से विश्वविद्यालय पंचांग का प्रकाशन होता है। यह पंचांग पूर्णतः शास्त्रसम्मत है। मथुरा उत्तरप्रदेश का मथुरा शहर है ग्रीनविच से पूर्वी रेखांश 77^0 41 तथा उत्तरी अक्षांश 27^0 28 पर स्थित है। भगवान श्रीकृष्ण की जन्मभूमि मथुरा के अक्षांशादि के आधार पर श्री ब्रजभूमि पंचांग का निर्माण होता है। इस पंचांग में केतकी चित्रपक्षीय अयनांश का प्रयोग होता है। इस पंचांग के संपादक पं. श्री कौशल किशोर कौशिक हैं। यह पंचांग सन् 1994 ई. से प्रकाशित हो रहा है। रामगढ़ (शेखावटी) रामगढ़ (शेखावटी) भारत के मानचित्र पर ग्रीनविच से पूर्वी रेखांश 74^0 59 तथा उत्तरी अक्षांश 28^0 0 पर स्थित है। रामगढ़ (द्गोखावटी) के अक्षांशादि के आधार पर वेधसिद्ध सूक्ष्मदृश्य गणित से पं. श्री वल्लभ मनीराम पंचांग का निर्माण होता है। इस पंचांग के गणित कर्ता पं. श्री ग्यारसीलाल शास्त्री हैं। श्री वेंकटेश्वर शताब्दी पंचांग, श्री सरस्वती पंचांग एवं श्री वल्लभ मनीराम पंचांग के ग्रह गणित का सिद्धांत समान प्रतीत होता है। अयोध्या अयोध्या भगवान श्री राम की जन्मस्थली के रूप में एक धार्मिक स्थल है। यह ग्रीनविच रेखा से पूर्वी रेखांश 82^0 12 तथा उत्तरी अक्षांश 26^0 47 पर स्थित है, जिनके आधार पर यहां से श्रीराम जन्मभूमि पंचांग का निर्माण होता है। इस पंचांग के संपादक पं. विंध्येश्वरी प्रसाद शुक्ल हैं। उपर्युक्त स्थलों के अतिरिक्त उत्तर भारत के कई अन्य शहरों से भी पंचांगों का प्रकाशन होता है, जिनमें ग्वालियर से डॉश्री कृष्ण भालचंद्र शास्त्री मुसलगांवकर द्वारा रचित पंचांग, दतिया (म.प्र.) से प्रकाशित तांत्रिक पंचांग, अहमदाबाद से प्रकाशित संदेश प्रत्यक्ष पंचांग, रुद्रपुर (नैनीताल) से पं. श्री भोलादत्त महतोलिया कृत श्री देवभूमि पंचांग, करौली (राजस्थान) से राजज्योतिषी पं. श्री शिवनारायण शर्मा महेश द्वारा संपादित शिवविनोदी मदनमोहन पंचांग आदि प्रमुख हैं।

निष्कर्ष –

भारतवर्ष में पंचांग निर्माण की एक लम्बी परम्परा चली आ रही है। सम्प्रति यहॉ 300 (अनुमानित) से अधिकाधिक पंचांग प्रकाशित हो रहे हैं, किन्तु सभी पंचांगों में एकरूपता नहीं है। इसके कई कारण होते हैं। वाराणसी में मैं कई पंचांगकारों (पं0 हीरालाल मिश्र, डॉ0 सत्येन्द्र मिश्र, डॉ0 रामचन्द्र) पाठकद्ध आदि के बीच अध्ययन किया तो पाया कि पंचांग बनाने की अपनी एक अलग विधा है, वह अपनी सहुलियत के हिसाब से एक पद्धति को मानकर पंचांग का निर्माण करते हैं। जहॉ दृक्सिद्ध पंचांग बनाया जाता हैं उनकी अपनी अलग विधा है। ग्रहण भी कलकता से प्राप्त मुद्रित तथ्य से पंचांगों में उद्धृत कर दिया जाता हैं। पंचांग के अंगों का मूलाधार भकक्षा में गतिशील ग्रह हैं। भकक्षा में ग्रहों की स्थिति मापन ही ग्रहस्पष्टीकरण कहा जाता है। ग्रह स्पष्टीकरण पंचांग का प्राण माना जाता है, क्योंकि मानव की स्थिति '– परिस्थिति की व्याख्या स्पष्ट ग्रहों से ही संभव है। सूर्य – चन्द्र का क्षितिज जन्म उदयास्त एवं अन्य ग्रहों का सूर्यासन् जनित उदयास्त ही व्रत – पर्वों से संबंध रखता है।

सन्दर्भ सूची : –

1. नारद पुराण – भाग 2, अध्याय 6, श्लोक 34–36
2. पंचांग गणितम – पं0 कल्याणदत्त शर्मा
3. भारतीय ज्योतिष – शंकरबालकृष्ण दीक्षित